हर स्थिति में धर्म की साधना करनी चाहिए : साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

सरदारशहर 17 अगस्त, 2010

इन्द्रियां क्षीण हो जाती है, कर्म क्षेत्र से आगे बढ़ने की बात सोचता है एक अवस्था के बाद सामाजिक दायित्वों को नहीं निभाया जा सकता है फिर धर्म की आराधना कैसे कर सकता है। भगवान महावीर ने कहा है कि जब तक वृद्ध अवस्था न आ जाए, बीमारी न सताए तब तक धर्म की आराधना करते रहना चाहिए।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण की शिष्या महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने तेरापंथ भवन में उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि हर अवस्था में धर्म की साधना करनी चाहिए। किशोर भी धर्म के साधक बन सकते हैं, जिस साधन से हमारी आत्मा शुद्ध पवित्र होती है उस साधना का लाभ धर्म है। आत्मा की पवित्रता के लिए आवश्यक है क्रोध को जीतना, लोभ पर नियंत्रण करना, मन का विशुद्धिकरण करना, हमें धर्म को विभिन्न रूपों में समझना होगा। अध्यात्म धर्मों का आत्मानुभूति है संसार में जितने पदार्थ हैं वे सब जानने योग्य है, ज्ञाता हमारी आत्मा है। आत्मा का अनुभव हमें हो जाए, आत्मा में रहना सीख लें।

- शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)